जागो लोगां जगत रा

(राजस्थानी दोहे)

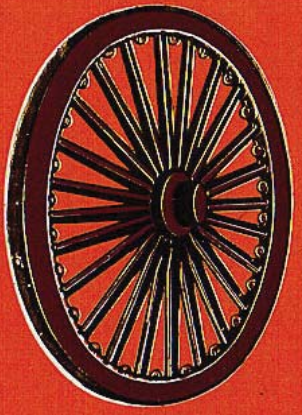

सत्यनारायण गोयन्का

विपस्सी साधकां रै प्रेरणा जोग।

जागो लोगां जगत रा

(राजस्थानी दोहे)

विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

न तेरा!

न मेरा!

अै दूहा धरम रा!

हितेसी जन जन रा!

मैल काटै मन रा!

जागो लोगां जगत रा

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय ९

दो शब्द १०

अध्याय १ : नमनूं सीस नवाय १३

जय जय जय गुरूदेवजू १५

नमन करूं मैं बुद्ध नै २२

नमन करूं मैं धरम नै २५

नमन करूं मैं संघ नै २८

नमस्कार जननी जनक ३०

अध्याय २ : जागो लोगां जगत रा ३१

जन जन मँह जागै धरम ३३

जाग्यां रतन अमोल ३५

मन री गांठ्यां खोल ३९

लोक लोक मंगळ जगै। ४३

इब आयो परभात ४९

अध्याय ३ : धरम जाणिये सोय ५१

धरम सदा ही एक ५३

जो धारै सो पाय ५५

कोरी बातां रो धणी ६१

सदाचार होवै सबळ ६३

धन्य! धरम ऐसो मिल्यो ६८

कुण मेरो करतार ७२

भरम भ्रांति भरपूर ७४

कुण मारग दिखलावसी? ८०

संप्रदाय प्यारो लगै ८७
दरसन रा जंजाळ ९०
करमकांड मँह उळझग्यो ९३
निकमी राख भभूत ९५
मिनख जमारो पावियो ९७
पूगै मंगळ धाम १००
चाख धरम रो स्वाद १०३

अध्याय ४ : यो तो नरतन चित्त रो १०५

मन बैरी मन मीत १०७
निरमल मन ही मुक्त है १०९
मन निरमळ कोमल हियो १११
मन पर राख नकेल ११४

अध्याय ५ : सतकरमां स्युं प्रीत ११७

करम तिहारो मीत ११९
दुसकरमां दुख होय १२४
सरण सांचली स्वयं री १२८
बीत्यो छण नहिं आय १३०
या संतां री रीत १३४
उत्तम मंगळ होय १३८
अंतर दिवळा जळ रह्या १४२

अध्याय ६ : आर्यसत्य अनमोल १४३

सुखियो दिखै न कोय १४५
त्रिस्णा तजी न जाय १४७
राग जिसो ना रोग है १५२
बादळ छाया मोह रा १५४
सुपनां लिया सँजोय १५७

अहंकार छूट्यां बिना १५९
जद देख्या निज दोस १६२
जाण्यो दुख निदान १६४
या पगडंडी धरम री १६८

अध्याय ७ : आठ अंग रो धरम पथ १७१

सील समाधी ग्यान १७३
सील धरम रो मूळ १७५
सांच बोल रै मानखा १७७
हुवै सुद्ध ब्योहार १७९
प्रग्या ग्यान प्रदीप १८२
हो अंतरमुख मानखा १८४

अध्याय ८ : मिली सुमंगल साधना १८९

मंगळमयी विपस्सना १९१
वीतराग होये बिना १९३
क्रोध न करियै भूल १९४
दिन खोया परमाद १९७
तप तप कुंदन होय १९९
पावन आनापान २०१
मिलग्यी बिमल विपस्सना २०४
सरित प्रवाह प्रमाण २१०
मद छायां दुख नीपजै २२४
मैं, मैं रो अभिमान २२५

अध्याय ९ : मुक्ति द्वार खुल ज्याय २२७

दान धरम री चेतना २२९
प्रग्यापति है सोय २३२
सही स्रमण है सोय २३५

धीर! धरम ही धार २३७
आसण सिध हो ज्याय २४१
सात अंग संबोधि रा २४२
अध्याय १० : धन पल, धन छण, धन घड़ी २४३
चित समता ना खोय २४५
चित निज धरम समाय २५०
जागै ब्रह्म विहार २५४
आज हरख रो दिवस है २५५
सब को मंगळ होय २५६

प्रकाशकीय

शिविर के दौरान साधक पू. गुरुदेव गोयन्काजी के दोहे सुनते हैं अथवा विपश्यना पत्रिका में इन्हें पढ़ते हैं तो उनकी स्वाभाविक इच्छा होती है कि इनका पूर्ण संकलन कहीं पढ़ने को मिले। अतः हर शिविर के अंत में इनकी मांग बराबर बनी रहती है। विपश्यी साधक स्व. श्री अगरचंद नाहटा ने गोयन्काजी के अनेक दोहे देखे और उनके हृदयस्पर्शी भावों से इतने प्रभावित हुए कि अपने जीवन के अंतिम दिनों तक उनके प्रकाशन के लिए पत्र पर पत्र लिख कर आग्रह करते रहे। परंतु हिंदी एवं राजस्थानी दोहों की संख्या हजारों में थी और वह भी यत्र-तत्र बिखरे हुए थे। अतः उनका संकलन, वर्गीकरण और संपादन का काम आसान नहीं था। बहुत दिनों से प्रयत्न चल रहा था कि शीघ्र ही यह कार्य संपन्न हो। इसे साकार करने में जयपुर के विपश्यी साधक श्री रमेश थानवी ने मुख्य भूमिका निभाई और अपने व्यस्त कार्यक्रमों में से समय निकाल कर पू. गुरुदेव के हिंदी और राजस्थानी के कतिपय दोहों का संकलन, विषयानुसार वर्गीकरण तथा संपादन किया और असीम पुण्य अर्जन किया।

विपश्यना विशोधन विन्यास इनका प्रकाशन कर धन्यता अनुभव करता है। विश्वास है राजस्थानी भाषा में धर्म के दोहों का यह संकलन साधकों को ही नहीं, अपितु सभी पाठकों को समान रूप से रुचिकर एवं प्रेरणास्पद प्रतीत होगा और इस मंगलवाणी से उत्साहित होकर वे धर्मपथ के पथिक बनेंगे और अपना सही मंगल साध लेंगे।

'जागो लोगां जगत रा' की प्रथम आवृति सन १९८८ में प्रकाशित हुई थी। इसकी प्रतियां समाप्त होने पर राजस्थान सरकार की ओर से बड़ी संख्या में खरीद की मांग आयी परंतु किसी कारणवश इसके पुनर्प्रकाशन में विलंब होता गया। अब इसमें अनेक मनीषियों के चिंतन-मनन स्वरूप संशोधन के साथ कुछ नए दोहे भी जोड़े गये हैं। विश्वास है नया संस्करण पाठकों को अधिक रुचिकर व लाभदायक होगा।

सबका मंगल हो!

विपश्यना विशोधन विन्यास

दो शब्द

मूल शेखावाटी– चूरू के श्री सत्यनारायणजी गोयन्का आज विश्वविख्यात महापुरुष हैं। उनका जन्म और व्यापार आदि लंबे समय तक बर्मा में रहा। वहीं 'विपश्यना' साधना प्राप्त कर स्वयं सुखी व लाभान्वित होने के बाद उसका प्रचार करने के लिए भारत आ गये। जुलाई, १९६९ में भारत में पहला विपश्यना शिविर बंबई में लगाया गया। तब से विपश्यना साधना का देश में बहुत प्रचार बढ़ गया है। विदेशों में भी इसकी मांग व प्रचार दिनों-दिन बढ़ती जा रही है।

गोयन्काजी स्वयं बहुत ही ऊंचा व पवित्र जीवन जी रहे हैं और हजारों व्यक्तियों ने इस साधना द्वारा अपने जीवन को सुखी, शांत व समाधिमय बनाया है। 'विपश्यना' नामक मासिक पत्रिका में जब मैंने 'धर्म के दोहे' राजस्थानी और हिंदी दोनों भाषाओं में अलग-अलग छपते देखे तो मुझे उनके मातृ-भाषा के प्रेम को देखकर सुखद आश्चर्य हुआ। मैंने उन्हें पत्र द्वारा अनुरोध किया था कि इन दोहों का, विशेषतः राजस्थानी दोहों का संकलन करके एक ग्रंथ प्रकाशन करवा दें, क्योंकि ये दोहे बड़े सारगर्भित और प्रेरणादायी हैं। उन्होंने इन दोहों का संग्रह ग्रंथ शीघ्र ही प्रकाशित करना स्वीकार किया है। वे बहुत सरल, निर्भिमानी, उदात्त विचारों वाले धर्मनिष्ठ व्यक्ति हैं।

'विपश्यना' पत्रिका में सारगर्भित और प्रबोधक सैंकड़ों दूहे प्रकाशित हो चुके हैं। श्री गोयन्काजी का मातृ-भाषा प्रेम और सृजनधर्मिता सराहनीय है। संतों की वाणी की तरह ही इनके दोहों का बड़ा महत्त्व है। 'विपश्यना' पत्रिका में जिस विषय पर इनका लेख आता है, प्रायः दोहे भी उसी से संबंधित होते हैं। इसलिए प्रकाशित दोहे कई विषयों के हैं। फिर भी इनका मुख्य संदेश धर्म का ही रहा है।

– स्व. श्री अगर चंद नाहटा